I J R S S I S, Vol. V, Issue (2), May-2017: 1-3 ISSN 2347 – 8268

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES AND INFORMATION STUDIES
© VISHWASHANTI MULTIPURPOSE SOCIETY (Global Peace Multipurpose Society) R. No. MH-659/13(N)
www.vmsindia.org

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास

आर. बी. भुयेकर,
गोपालकृष्ण गोखले महाविद्यालय, कोल्हापूर (म.रा.) भारत

साहित्य किसी भी जाति या समाज की सृजनशीलता का सर्वश्रेष्ठ परिचायक होता है। साहित्य और समाज का गहरा सम्बन्ध होता है, इनमें से एक बिना दुसरा अधुरा रहता है। इसलिए मानव जीवन को समाज से और समाज को साहित्य से अलग करने की कल्पना नहीं की जा सकती। साहित्य का मानव जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। वह समाज का तीसरा नेत्र होता है। इसका एक मात्र उद्देश्य समाज में मंगल की स्थापना करना। साहित्य समाज का वह शिक्षक है, जो समाज रूपी अज्ञानता को दूर, करने का सफल प्रयास करता है। साहित्य अपने लौकिक व्यावहारिक एवं अध्यात्मिक ज्ञान के माध्यम से कल्याणकारी समाज की निर्मिती करता है। साहित्य मोती के समान है, जो अपनी सृी के लिए समाज रूपी सीपी की चाहत का लक्ष्य रखता है। साहित्य एक ऐसा फूल है, जो समाज रूपी जल पर सदैव पल्लवित एवं पुष्पित होता है। उस साहित्य को उत्कृ श्रेणी का माना जाता है, जो समाज की अनेकता को एकता में समेटकर समस्थाओं का निवारण करने का सफल प्रयास करता है।

इस .ि से हिंदी साहित्य की वैभवशाली परम्परा है। आदिकाल से लेकर आज तक हिंदी साहित्य के कहीं ऐसे साहित्यकार हुए जिन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से युगीन परिवेश को स्प करते हुए, शोषण अन्याय, अत्याचार, वर्गभेद, आतंकवाद हिंसा अलगाववाद आदि समस्याओं को यथार्थवादी .िकोण से रेखांकित किया है। प्रस्तुत अन्तर्रीय संगोष्ठी में चर्चा के लिए विविध विद्‌या शाखा से सम्बन्धीत अलग—अलग विषय दिये है। उनमें से 'साहित्य और समाजशास्त्र' ;स्पजमतंजनतम ंदक ेवबपवसवहल) इस विषय पर शोध आलेख प्रस्तुत करना चाहता हूँ।

"साहित्य और समाजशास्त्र" मानव जीवन की पहचान और अस्मिता की तलाश का प्रमुख अंग है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है, जो समाज में रहता है और समाज में रहकर वह अपना व्यवहार करता है। और इस व्यवहार को भाषा के माध्यम से वह अभिव्यक्त करता है। भाषा की देन साहित्य है। साहित्य हमेशा युगीन परिवेश का जीता—जागता दस्तावेज होता है। युग की सभी समस्यां को व्यापकता से साहित्यकार रेखांकित करता है। 'कितने पाकिस्तान' हिंदी के प्रसिद्‌ध साहित्यकार कमलेश्वर द्‌वारा लिखित हिंदी साहित्य के अंतिम दशक का सबसे बहुचर्चित उपन्यास रहा है। विश्वव्यापी चेतना का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत उपन्यास में दिखाई देता है। प्रस्तुत उपन्यास की समीक्षा करने से पहले अंतिम दशक का युगीन परिवेश और कितने पाकिस्तान की समीक्षा कराना यथोचित हो जायेगा।

अंतिम दशक भारतीय जनमानस की जीवन का महत्त्वपूर्ण मोड़ है। अंतिम दशक का हिंदी साहित्य 'ग्लोबलाइजेशन' के इस कठिन समय में भोगवाद तथा मनुष्य—मनुष्य के बिच के विभाजक की रेखाएँ दूर करने का प्रयास करता हुआ दिखाई देता है। भूमण्डलीकरण और आर्थिक उदारीकरण की इस आँधी में भारतीय समाज झकझोरता हुआ दिखाई देता है। भारतीय लोगों के जीवन में अंतिम दशक तकनीकी का प्रारंभ काल है। इस दशक की सामाजिक उथल—पुथल साहित्यकारों ने अपने उपन्यासों में अभिव्यक्त की है। अंतिम दशक में वैज्ञानिक अविष्कारों की तथा तकनीकी प्रगतियों की चारों ओर धूम—सी दिखाई देती है। इस सदी के लोगों के जीवन में मीड़िया तथा संचार साधनों ने पूरी तरह से दखलदांजी की है। रेड़ियो, फोन, टी.वी., इंटरनेट, पत्र—पत्रिकाएँ मनुष्य जीवन के अंग बन गए है। इस सदी में औद्योगिकीकरण और व्यवसाय ने नई करवटे ली है। इसलिए आज देश की चार दिवारिओं को लाँघकर भूमण्डलीकरण की धूम मची हुई है। भूमण्डलीकरण के इस युग में समाज में एक वर्ग संपन्न बनता जा रहा है, तो दूसरा आर्थिक पिछड़ेपन से गरीब बनता जा रहा है। वैश्वीकरण के कारण इस सदी में समाज के सामने अनेक चुनौतियाँ निर्माण हो गई हैं। सांप्रदायिकता, प्रचार, आतंकवाद, अलगाववाद आदि इस कालखंड की प्रमुख देन मानी जाती है।

आतंकवाद तथा अलगाववाद का बेबाक चित्रण कमलेश्वर ने 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में चित्रित किया है। प्रस्तुत उपन्यास में युद्‌ध और विभाजन तथा आतंकवाद के खतरे को केंद्र में रखा है। विभाजन की यह त्रासदी मानव जीवन के लिए कितनी भयानक बनती है, इसको इस उपन्यास के माध्यम से दर्शाया है। मजहब और कौम के नाम पर होनेवाले विभाजन की त्रासदी को प्रस्तुत उपन्यास में दर्शाया गया है। सन १९९९ में भारत और पाकिस्तान के बीच हुए कारगील युद्‌ध केंद्र बिंदू में है। जिसे देखकर स्वयं लेखक इतिहास का अवलोकन करता है, क्योंकि "वर्तमान की जड़े अतीत में होती है।' उपन्यास का संपादक अदिबे आलिया जानता है कि सच इतिहास मनुष्य के दिलो—दिमागों पर लिखा जाता है। उसे सिर्फ रचनाकार ही पढ़ सकते है। अत: वह सत्ता अदालत समाचारा, इतिहास आदि व्यंग्यपरक वार करता है।"१

कमलेश्वरजी ने दुनिया में विविध कारणों से बननेवाले पाकिस्तानी रवैए का निषेध किया है। इस

उपन्यास द्वारा मानवीय जीवन और मूल्यों को बचाए रखने का एक वैश्विक परिप्रेक्ष्य में सर्जनात्मक प्रयास भी है। पाकिस्तान बनने के कारण चाहे जो कुछ भी हो, लेकिन उसके मूल में नफरत, स्वार्थ परखता, संकीर्णता, सत्ता की हवस, धर्माधता, सियासी चाल, आदि स्प रूप दिखाई देते हैं। इसके बारे में कमलेश्वर स्प शब्दों में कहते हैं, "पाकिस्तान से पाकिस्तान पैदा होता है... यह छूत का रोग है, जब तक धर्म, नसल, जाति और दुनिया की पहली शक्ति बनने का नशा ही नहीं टूटता तब तक सत्ता और वर्चस्व की हवश नहीं मिटती, तब तक इस धरती पर पाकिस्तान बनाए जाने की नृशंस परंपरा जारी रहेगी।२ इस प्रकार पाकिस्तान बनाने की प्रकृति एक संक्रामक रोग है। यह मानव जीवन, मानवी मूल्य एवं ग्र विरोधी है। इसीलिए कमलेश्वर का अदीब, अर्दली इसका समर्थन नहीं करते।"

पाकिस्तान अपने आप नहीं बनता उसे बनाया जाता है। जब एक कौम के लोग पाकिस्तान बनाने की पहल करते हैं, तब कौम के बाहर की शक्तियां भी पाकिस्तान बनाती है, इनके निर्माण के पीछे अलग–अलग कारण है। कदाचित धर्म, संस्कृति, भाषा, सियासी चाल आदि कोई भी कारण हो सकता है। उदाहरण के रूप में इराक के भीतर सिंधी और बलूच, कश्मीर के भीतर हिंदु पंडित, भारत के भीतर आर.एस.एस, श्रीलंका के भीतर एल.टी.टी. वे सभी एक देश की कौम के लोग अपना अलग–अलग पाकिस्तान बनाने में लगे है।

पाकिस्तान बनाने का मामला अब किसी एक मुल्क का नहीं है, बल्कि विश्व के तमाम देशों में संक्रामक रोग की तरह यह फैल गया है। ड्गअब तो दुनियां के सब मुल्कों में नफरत का एक पाकिस्तान बनाने की कोशिश जारी है। क्या हुआ बोस्निया में? क्या हुआ है साइप्रस में ? क्या हुआ है तब के टूटे सोवियत यूनियन और अब के बने फेडरेशन में? क्या हो रहा है आज के लोगों के खिलाफ एक दूसरा पाकिस्तान ईजाद करना चाहता है।फफ ३ इस उपन्यास द्वारा कमलेश्वर जी ने भारत के तथा दुनिया के सत्तासीन फासीवादी शक्तियों की धज्जियाँ उड़ाने का प्रयास किया गया है। लेखक कहते हैं कि वर्तमान संस्कृति के सामने नव फासीवाद का बहुत बड़ा खतरा है। साथ ही भूमंडलीकरण के द्वारा निर्माण हुआ नव साम्राज्यवाद तथा नव उपनिवेशवाद प्रमुख है। उपन्यास का नायक अदीब आज की पृथकतावादी पाकिस्तानी मानसिकता का विरोध करता है। विश्व के तमाम देशों के भीतर अन्तर्कलह, अशांति, खून–खराबे के कारण इस अलगाववादी मानसिकता का विरोध करता है। वह आजाद सिंध के मांग करनेवाले कराची के वाशिदों को कड़े शब्दों में आगाह करता है, ड्गजितना जो कुछ टूट रहा है उसे भूल जाओ। जो कुछ टूटने के बाद बना है, उसे टूटने से बचाओ। जितने मुल्क बनेंगे वे सिर्फ इंसान को तकसीम करेंगे। जरूरत से ज्यादा इस दुनियाँ का बँटवारा हो चुका है। खुदा के लिए बँटवारे की इस जहमियत को खतम करो।फफ४ और आगे वह अपना निर्णय सुनाते हुए कहता है कि ड्गयह अदालत पाकिस्तान नाम के देश और उसकी एकता को अहमियत देती है, पर यह अदालत पाकिस्तान नाम के उस जज्बे को गलत और खतरनाक मानती है, जिसके आधार पर पाकिस्तान बनाया गया है। यदि इस सोच को दफनाया न गया तो अगली सदियों में एक मानवीय विश्व नहीं बनेगा और तब यही कब्रिस्तान बन जाएगा और हर व्यक्ति अपनी सोच का कब्रिस्तान बनाना चाहेगा, जिसे वह अपना पाकिस्तान पुकारेगा।"५ कमलेश्वर ने 'कितने पाकिस्तानफ के लेखन में अपनी जिन दो मजबूरियों का जिक्र किया है, उनमें पहले यह थी कि कोई नायक या महानायक उनके सामने नहीं था। इसलिए समय को ही नायक या महानायक उनके सामने था। इसलिए समय को ही नायक, महानायक और खलनायक बनना पड़ा, परंतु समीक्षक अदीब को ही इस उपन्यास का नायक मानते है। इसके अलावा इस उपन्यास में प्रोमिथ्यूस, गिलगमेश, अंधे भिखारी कबीर और अश्रुवैध इस उपन्यास के सशक्त पात्र है, जिनकी आवाज के द्वारा कमलेश्वर ने मानव मुक्ति संघर्ष को अभिव्यक्त किया है। इन पात्रों की यह खासियत है कि ये थल, काल और सीमाओं को लांघकर वर्तमान में हस्तक्षेप करते हैं। वर्तमान संघर्ष में शामिल होकर अपने दायित्त्व को निभाने का प्रयत्न करते हैं।

भूमंडलीकरण दुनिया को शोषण की जंजीरों में बांधता है, ताकि प्रेम के सूत्र से जोड़ता है। इसलिए भूमंडलीकरण के दुस्समय में विभाजनों की संख्या अर्थात पाकिस्तानों की संख्या रोजाना बढ़ रही है। इन्हीं वर्तमान वास्तविकताओं की पृष्ठभूमि बनाकर रचे गए ड्गकितने पाकिस्तानफ में कमलेश्वर ने तमाम विभाजनों के विरोध में विपक्षी आवाज दर्ज कराने के साथ साथ शांति के लिए सांस्कृतिक प्रतिरोध के विकल्प की तलाश भी करते हैं। पाकिस्तान विभाजनों का एक प्रतीक मात्र है, चाहे वह मूर्त हो या अमूर्त। समय ही साक्षी हैं कि पाकिस्तान को बनाने का उपक्रम अनादिकाल से अब तक सरगरम है, तमाम पुरानी सभ्यताओं के पुरोहितों और ब्राह्मणों ने अपने लिए अलग पाकिस्तानों को जन्म दिया था। आधुनिक संदर्भ में युगोस्लाविया, इराक, अफगानिस्तान टुकड़ों में बँटे सोवियत यूनियन या वर्तमान रशियन फेडरेशन और खुद पाकिस्तान जैसे देशों में अलग–अलग पाकिस्तानों की मांगे हो रही है। इस दिगंत व्यापी पाकिस्तानों की सच्चाई की तह तक जाकर उसकी गहराई को जांचने और परखने की कोशिश बहुत कम ही हुई है। इस प्रयास में भारत–पाकिस्तान विभाजन को नमूने के तौर पर कमलेश्वर ने पेश किया है।फफ६

निष्कर्ष :

इस प्रकार कितने पाकिस्तान आजादी के बाद ग्रीय और अंतर्ग्रीय स्तर पर उभरे तमाम अतिवादी और एकांगी विमर्शो भूमंडलीकरण, बाजारवाद, सांस्कृतिक ग्रवाद, इस्लामी ग्रवाद, दलित विमर्श तथा स्त्री विमर्श का सार्थक दस्तावेज है। इसमें सभ्यता, संस्कृति, युद्ध, प्रेम और संस्कृतियों का चित्रण करते हुए कलात्मक

ढंग से प्रस्तुती दी है। शिल्प की .ि से अतीत, वर्तमान और भविष्य इन तीनों कालों का साक्षात्कार पाठकों के सम्मुख रखा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१. त्रिवारी डॉ. गोरखनाथ, अंतिम दशक के हिंदी उपन्यास का समाजशास्त्रीय अध्ययन, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, पृ. ८३
२. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एंड सन्स, नई दिल्ली, सं. २०००, पृ. १८७
३. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एंड सन्स, नई दिल्ली, सं. २०००, पृ. ९३
४. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एंड सन्स, नई दिल्ली, सं. २०००, पृ. १५३
५. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एंड सन्स, नई दिल्ली, सं. २०००, पृ. १५६
६. मोहन (संपा.) एन, विभाजनों के विरुद्ध दर्ज सबसे विश्वसनीय आवाज, कितने पाकिस्तान,
उत्तरशती का हिंदी उपन्यास, पृ. ५६—५७

****